लहरों की लय

रमणिका गुप्ता

प्रख्यात लेखक-चिन्तक निर्मल वर्मा ने कभी कहा था—'यात्राएँ हमें बाहर ही नहीं, हमारे अन्दर के अपने अनजाने कोनों तक भी ले जाती हैं।' रमणिका गुप्ता अपने इन यात्रा-संस्मरणों में बार-बार अपने अन्दर के इन्हीं अनजाने कोनों में पहुँच जाने के रोमांच से भरी दिखती हैं, मगर यह कोना महज एक लेखक का नहीं, बल्कि एक सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक कार्यकर्ता का भी कोना है, जो एक तरफ नियाग्रा जलप्रपात व एल्पस पर्वत के अद्‌भुत सौन्दर्य पर मुग्ध होता है—नार्वे के जांबाज नाविकों के डोंगियों में जोखिम भरी समुद्री यात्राएँ करने या उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के लिये साहसिक यात्राओं पर निकल जाने पर विस्मित ही नहीं, अभिभूत भी होता है। दूसरी तरफ फिलीपींस में सोने की खदानों में पोटेशियम के साए में काम करते या छोटे घरों में मशरूम की तरह ठूँस-ठूँस कर भरे मजदूरों की दुर्दशा पर तड़पता-छटपटाता और गुस्से से भर उठता है तो रूस में साम्यवादी व्यवस्था के विघटन और पूँजीवाद के निर्लज्ज आत्मविश्वास से भी आहत होता है। वहीं वह क्यूबा जैसे छोटे-से देश को बर्बर पूँजीवाद से टकराकर सम्मान से उठ खड़े होते देखकर गहरी आश्वस्ति से भर जाता है।

विश्वास है यात्रा-संस्मरणों में वैचारिकता के लिये निर्मित यह स्पेस पाठकों को उन देशों-लोगों की संवेदना के करीब लाएगा।

—अभिषेक कश्यप

लहरों की लय

यात्रा-संस्मरण

भूमिका

दो बातें

न जाने किस मिट्टी की बनी थी कि घर-गिरस्ती, चूल्हा-चौका रास नहीं आया। औरत थी मगर 'गुलामी का आनन्द' नहीं 'स्वतन्त्रता का खतरा' रास आया। होश सँभालने के बाद वही किया, जो मन-मिजाज को जँचा। अपना भला-बुरा खुद तय किया। अपनी जिम्मेवारी खुद उठाई और जवाबदेही से कभी मुकरी नहीं। बड़ी हुई तो घर बन्दीगृह लगने लगा... बन्दीगृह की दहलीज लाँघ गई। तब से संघर्ष, लेखन और यात्राओं से मेरा चोली-दामन का रिश्ता हो गया। इसमें भी यह कहना गलत न होगा कि यात्रा और लेखन मेरी समान्तर गतिविधियाँ रही हैं। मेरा ज्यादातर रचनात्मक लेखन यात्राओं की देन है। मैं देश-विदेश की लम्बी-लम्बी यात्राएँ करती रही। घूमती रही, भटकती रही... और यूं भटकते गुजरा जीवन!

मैं महसूस करती हूँ स्त्री के लिये यात्राओं का मतलब वही नहीं होता, जो किसी पुरुष के लिये होता है। स्त्री के लिये घर यथास्थितिवाद का प्रतीक है और जब वह घर की दहलीज लाँघती है तो मुक्ति की दिशा में उसकी वह पहली यात्रा होती है। यात्राएँ स्त्री को यथास्थितिवाद की रूढ़ि से बाहर निकालती हैं, जीवन में बेहतरी की उम्मीद जगाती हैं, यह मैंने अपने अनुभव से जाना है।

यह पुस्तक सन् 75 से सन् 1994 तक मैक्सिको, अमेरिका, कनाडा, लन्दन, बर्लिन, बेल्जियम, फ्रांस, स्वीट्ज़रलैंड, इटली, यूगोस्लाविया-सल्वानिया, नार्वे, स्वीडन, थाइलैंड, हांगकांग, फिलीपींस, जापान, क्यूबा और रूस की करीब 30 बरसों के दौरान

किये गए ज्यादातर उन यात्रा-अनुभवों पर केंद्रित है, जो मैंने यूनियन के मजदूर प्रतिनिधि व राजनीतिक पार्टी के नुमाइंदे के नाते की; पर कई देशों में मैं वहाँ की कला, इतिहास, साहित्य व संगीत और नृत्य के रू-ब-रू होने के लिये भी गई। पता नहीं यह मेरे स्त्री होने की फितरत है या लम्बे समय तक मजदूरों के बीच ट्रेड यूनियन में काम करते हुए अर्जित की गई संवेदना; कि चाहे मैक्सिको, अमेरिका, बर्लिन, बेल्जियम, नार्वे, स्वीडन, फिलीपींस हो, क्यूबा हो या रूस जहाँ भी गई महज प्रतिनिधि या पर्यटक बनकर नहीं गई। उन देशों में मजदूरों के हक कितने सुरक्षित हैं, पूँजी बनाम श्रम के शाश्वत द्वन्द्व के क्या आयाम हैं, स्त्री और पुरुष, प्रकृति और मनुष्य के बीच के सम्बन्ध कैसे हैं, स्त्री के हक कितने सुरक्षित हैं यह सब देखने-जानने में भी मेरी गहरी दिलचस्पी रही। वहाँ की ऐतिहासिक इमारतें, कला-वीथियाँ, शिल्पों के बाग, साहित्यिक-गोष्ठियों, चित्रकला की प्रदर्शनियों गली, गाँव, बाजार यहाँ तक कि वेश्याओं के मुहल्ले तक की खाक छानती रही। क्रान्तियों के चिह्न खोजती रही तो मैक्सिको, नार्वे-स्वीडन के आदिवासियों की जीवनशैलियों में भारत से साम्यता भी टटोलती रही।

कथाकार असगर वजाहत ने कुछ बरस पहले दिए साक्षात्कार में अपनी महत्वाकांक्षाओं की चर्चा करते हुए कहा था मैं चाहता हूँ दुनिया में जितनी भी जगहें हैं, सबको देख लूँ, जितने भी लोग हैं, सबसे मिल लूँ। उम्र के 77वें बसन्त पार कर जाने के बावजूद आज भी मेरी महत्वाकांक्षा कुछ इसी तरह की है। मैं फिर लम्बी विदेशी यात्रा पर निकल रही हूँ। लौट कर फिर इजिप्ट जाने का इरादा है नील नदी के नीले पानी में डूबती-घुलती मिस्र के स्तूपों और ममियों की सभ्यता की बदलती परछाइयाँ खोजने की हसरत अभी भी बाकी है।

इस पुस्तक की सामग्री को सहेजने-समेटने और तैयार करने में अभिषेक (अभिषेक कश्यप) ने जो सहयोग दिया, उसके लिए आभार छोटा शब्द है।

रमणिका गुप्ता

क्रम

मैक्सिको-अमेरिका-कनाडा यात्रा
यहाँ इतिहास भी आराम करता है 17

बर्लिन यात्रा
हमारे सामने गिलोटीन थी 36

बेल्जियम यात्रा
बेल्जियम में दो पूँजीपति 47

फ्रांस यात्रा
नसों में दस्तक देता संगीत 51

स्विट्ज़रलैंड यात्रा
जिनेवा में एक दिन 54

इटली यात्रा
अन्ना भी सुनती होगी शायद 56

युगोस्लाविया यात्रा
मार्शल टीटो का स्व-प्रबन्धन 60

जर्मनी यात्रा
अलादीन के चिराग का मायाजाल 73

ब्रिटेन यात्रा
हालात यहाँ भी खस्ता हैं 78

नार्वे यात्रा
समुद्र के गलियारे और दुस्साहसिक स्वप्न 85

स्वीडन यात्रा
मारमेड के साथ मारग्रेट 107

फ्रैंकफर्ट यात्रा
एक रात और भारत-वापसी 124

थाईलैंड यात्रा
जहाँ ब्रह्मा भी पूजा जाता है 126

हांगकांग यात्रा
बहुमंजिली इमारतों का शहर 131

फिलीपींस यात्रा
सोने की नदियाँ कौम की बर्बादी 137

क्यूबा यात्रा
सम्मान की संघर्ष-यात्रा 151

रूस यात्रा
बेग़ैरत हो गया देश 167